



ॐ नमः श्रीचक्रसम्बन्धाय ॥ ॐ श्रीः ॐ श्रीमद्वज्रसूत्रसूत्रवचननमः कः
मलायसंन्यक्कृष्णनारुवास्तुनकजाय नमो ॐ नमस्तु ३ नमो नमः रुक्माहं
त्वां नमस्यामिगुत्रुनार्थप्रसिद्धम ॥ वैद्यहवाधिसुमनसंतालसंजमिसुयंसु
हुत्रुयंत्युसा दे नममायकृष्णनसंरुव ॥ श्रीमन्नवज्रदाका यजकिनीचक्रवर्ति
न ॥ यंचक्रनविकाहमयग्राहमयजगमी नम ॥ यावन्नवज्रगकिन्यादिं नसं

१

कल्पवैदना लोकाकृष्यप्रवर्तिन्यस्मावर्तिन्या नमः सदा ॥ ॐ स्वरावशुद्रास
वधमाहं स्वरावशुद्राहं शुन्यगांरूपनवज्रस्वरावात्मकाहं ॥ ॐ श्रीः ॐ मटि
याका नक्षत्रं न्यगांरावयन ॥ श्रीका नमद्वयहानं हकाय हकुशु नं नृकाय
मयगगनव्यूहं कका नक्षत्रकचिस्थिते ॥ ॐ सर्वसत्त्वाज नक्षत्रं नक्षत्रं वक्षुदि
उज्ज्वलं वनमात्मानं लवधन ॥ नदनुकन नक्षत्रमदकिहाहं नक्षत्रं नक्षत्रं

यमधुलः वामहस्तकाजहा चंद्रमलं ॥ ॐ ह ॥ चोला ॥ नमहि ॥ दधूला ॥ स्वाहा ॥
 ॥ अंगुला ॥ वाषट् ॥ चला ॥ हुं हुं हो ॥ काला ॥ रुट् २ है ॥ पचिं चोकादको ॥ द
 पास ॥ ॐ वं ॥ चोला ॥ हां यो ॥ दधूला ॥ हुं मां ॥ अंगुला ॥ ऊं ऊं ॥ चला ॥ हुं हुं हो
 ॥ काला ॥ रुट् २ है ॥ पचिं चोकादको ॥ ॐ हुं स्वाहा ॥ वज्र ॥ ॐ हा स्वाहा ॥ घंघु ॥ क
 मलावर्तन गौरवा ॥ ध्यान ॥ ॐ श्री वज्र हे हे पूजक हुं रुट् जकिनी गाल सम्ब नः

२

स्वाहा ॥ पं आय चान पूजा ॥ प्रोक्तमहा ॥ ॐ स्वधु जा हूं रुट् ॥ ॐ स्वधु जा हूं सर्व
 विद्यान नूत्सा नम है ॥ गंध ॥ ॐ वज्र गंध स्वाहा ॥ पूष्य ॥ ॐ वज्र पूष्य स्वाहा ॥ धूप
 ॐ वज्र धूप स्वाहा ॥ दिय ॥ ॐ वज्र दिय स्वाहा ॥ ने वज्र ॥ ॐ वज्र ने वज्र स्वाहा ॥ लाः
 जाऊ न ॥ ॐ वज्र लाजाय स्वाहा ॥ स्वान जा किलख सधूना ववलिसुतय ॥ ॐ अ
 काजी मूरव सर्वधर्मा नामाश्च नूत्पं नत्वा ॥ ॐ अ ॥ हुं रुट् स्वाहा ॥ वलिजुधिया

न॥ ओं सुप्रतिस्थितवत् स्वाहा॥ मधुलाधिष्ठान॥ ओं आ० हं॥ मंत्रसाधन॥ पून० पात्र
 मूल्यां तां तावयन्॥ जीं का नैष पद्म हां ऊ नं मौ का नैष मा म कि कृष्णं दिजु जां वज्रवज्र
 हं मां हं का नैष आ हा कृष्णं दिजु ऊ वज्र वज्र हं हं न तं मयूग योग म हा ना ग
 न उ वि रं न य (०४०) पून० ह० हां धीं अं स्वाहा॥ ओं सु वं रं ऊ का मि नी सु वं रं ऊ
 (०४०) ध नी गु व द्रि ही को रं ध नी सु वं रं वा पि ठी रं ध य रं हं॥ अकार अ मृ

३

नं अ मृ नं प्र व ण य हं॥ न न वा म हं संप्र कृ यित्वा॥ त्रि अंगुली पटा क हं न हं मि अ
 धिष्ठान॥ ओं वज्र हं म हं॥ चतुर्विंशति अंग न्याण॥ यू॥ कया त॥ जां॥ च सु पी ल॥ ओं
 ऊ वं न म यं॥ ओं॥ मि रं वा गा॥ (०४०) दया कृ स्यं॥ लो॥ ज्ञानिका॥ रं॥ मिषा नि यं॥ रं
 वा ह नि यं॥ कां॥ या का नि यं॥ ओं॥ दू र नि यं॥ रं॥ न हं॥ कां॥ ज्ञा य रा का॥ कां॥ वा
 ल॥ लं॥ कथू॥ कां॥ नू ग॥ हि॥ च य या था॥ प्रं॥ सिंग॥ गुं॥ यं च॥ शं॥ व या नि

[illegible]

मिरवनिपां॥रुट२॥सर्वारंगभू॥आसन॥ॐस्थानममजकुहं॥नोहनिश्वं॥ॐश
गमजकुहं॥विजसि॥ॐआत्मानममजकुहं॥नरु॥स्वहृदयनकाप्रहावचुन
धुतायनि कूषूहंकाजंआ॥काजजकुहंॐकाजशुकुहंरुटकाजगं॥आलिकाति
पकिणय॥शुकुजकुहं कूषूवधूमृवाय्यरुदकुपजिनरुचक्रयज्ञवधवाकवि
शुद्धिं कुर्यात्॥पूषरुधवैजावनवदनारुधवउसूर्यसहस्ररुधपद्मनृ

धृष्यसंस्का नस्के (धवज्जनाज विस्मनस्के (धवज्जसुखः सर्वगथागमत्वे श्रीहनुक
 वडं ॥ चक्र धा माह वडी (धृष्यनया धवज्जी घानय निष्ठावडी वकु था जागव
 जी. स्यर्ण मायां सूखवडी सर्वपाय धवज्जवडी ॥ पृथ्वी धा गुपाननी आय
 धा गु मानिनी नजी धा गु जाक धशी वायू धा गु यज्ञ नृथ धत्री जाकाण धा गु प
 झ जानशी ॥ पचस्के धहू का न देवता हूनि ॥ पून गो आलि कालिय किम धन

का जय निशानं सूर्यमण्डलम (धृष्य हू का जय निशानं मेशरुगवंतं कृष्णवर्णं षष्ठुं प
 धमजुजा स्यावज्जवज्जवधधनं दिगिया स्या खज्ज नज्ज निपा रं हू निपा स्यां
 मत्रुखद्वागधनं चक्र मूर्खं कृष्ण वा मधम मृष्ट्र नक्त दज्जि (हापी नं विहाय ॥
 हं नो मचक्र मूर्खं स्थिता संलादि चक्रु जा नै ॥ नो नो त्यत्र चक्रु देव्य ४ का का
 दिहु विदिहु पूर्वो न यो न मि पूऊन य मजी ग्यादि ॥ दो दो वध नि आ गी प द

ॐ वामहस्तसंगुष्ठमङ्गीर्यां क्षाति कोदत्वा ॥ ॐ शृङ्गमिहं हं हं हं ॥ ॐ गृङ्ग
 हं हं ॥ ॐ गृङ्गापयश्च हं हं ॥ ॐ ज्ञानयश्च हं हं गवन्विद्याज्जहं हं हं ॥ काका
 वध कृष्ण ॥ उल्का वध ॥ ॐ स्वा नालयत्ता ॥ गृङ्गलास्या ॥ नाय जगि कृष्ण
 पिता ॥ यमदूगिपित ॥ ॐ यमदृष्टी जगत्ता ॥ यममधनीयमदृष्ट ॥ ॐ
 नादयाया वामहस्तकपालपा ॥ ॐ मधसंरुजा ॥ कीलन नामेय वगुलाफ

नउद्यया मनुष्यकंधृत्वा ॥ दक्षिणहस्तकर्मि ॥ ॐ मधसंरुजा ॥ ॐ मधसंरुजा ॥ ॐ मधसंरुजा ॥
 नदनुष्यकंधृत्वा ॥ दक्षिणहस्तकर्मि ॥ ॐ मधसंरुजा ॥ ॐ मधसंरुजा ॥ ॐ मधसंरुजा ॥
 नायवस्तुलाप्रमाणा वज्रवह्नि का नूपे जधगनोवज्र ॥ गीरमीविराव ॥ ॐ मध
 निवज्रीरुपवज्रवंधं हं हं हं ॥ ॐ वज्रप्रा ॥ ॐ वज्रप्रा ॥ ॐ वज्रप्रा ॥ ॐ वज्रप्रा ॥
 ॐ वज्रप्रा ॥ ॐ वज्रप्रा ॥ ॐ वज्रप्रा ॥ ॐ वज्रप्रा ॥ ॐ वज्रप्रा ॥ ॐ वज्रप्रा ॥

दिग्देधन॥ या का नवकीहं का निधं नखजुष्ट सुक् पयुनिवर्णिता॥ ॐ उदि
 विघ्ना नो हृदय कीलकं धृत्वा वज्रमूज नमः कोटयत्॥ ॐ घघ घा ग य श सर्वदुष्ट
 न हं रुट्॥ ॐ कीलय श सर्वपापान् हं रुट्॥ ॐ वज्रविलय वज्र धन जा अप
 यति सर्वविघ्नविनायका नाकाय वाक्चित्तवज्रानकीलय हं रुट्॥ कील
 नमं॥ ॐ वज्रमूज न वज्रकिलयमा को नय श हं हं रुट्॥ आ कोटय मंग॥ ॐ

निर्विघ्न हावयग॥ ॐ नि नकाय वज्रव नाविधि॥ नमः सहृदय सु हं का न न
 मिहः उगदर्थं कृत्वा अकनिष्ठु व नंगत्वा न सुख्य न नादि सै सि द्विष्टी ह
 नूकं रुगवती समापन मंजुलं यं पठ्यत्॥ नमो हृदी ज नमिमा लाहि जा वृष
 कान चक्र माका नंद रण हृष्टा नृहि मूर्ख महि संयुक्त समं न स मय मंजुलं प्रवर्ण
 न स म नो सुकृत्य स नामयि हिः पूजा देवि हि शं स ज यम्॥ कालमूद्रो दर्शय

॥ हूं ॥ ३ ॥ ओं श्री वज्र हं नृप वन सुत्का नाय पाश भूमि आचमनं पुनिकु स्वाहा ४ ॥
: हूं वे हा ॥ पूष्या सा ४ ॥ ओं श्री वज्र हं नृप क हूं हूं रुट् अकिनी जाल सम्म
ने सा हा ॥ हं दय मंत्र ॥ ओं श्री ३ हं ४ हं ४ हूं हूं रुट् ॥ उ यह दय ॥ ओं वज्र वे श्री
चनी य हूं रुट् ॥ दया हं दय ॥ ओं सर्व वृद्ध अकिनी य हूं रुट् ॥ दया उपह
दय ॥ ओं अकिनी य हूं रुट् ॥ पू ॥ ओं लोभ हूं रुट् ॥ उ ॥ ओं स्वतु ना हूं रुट्

ट् ॥ य ॥ ओं नृपिनी य हूं रुट् ॥ द ॥ ओं निदिक् ॥ ओं वाधिरिं प्रासृक लो ॥
हूं रुट् ॥ ओं निविदिक् ॥ ४ ॥ पू ॥ ओं कन २ प्रच (हूं रुट् ॥ उ ॥ ओं कन २ प्रच
हिं य हूं रुट् ॥ य ॥ ओं वंध २ प्रलम नी य हूं रुट् ॥ द ॥ ओं प्रो भय २ माग ना ली
हूं रुट् ॥ भू ॥ ओं क्राह्य २ विप्रमति य हूं रुट् ॥ ने ॥ ओं क्रां क्रां स्वकी लय हूं रुट्
॥ वा ॥ ओं क्रां क्रां लोक धनी य हूं रुट् ॥ ० ॥ ओं क्रां २ दु मरुत य हूं रुट् ॥ ओं विचि

रुचक्र ॥ पू ॥ ओं रुद्र २ जे जावति यहूँ रुद्र ॥ उ ॥ ओं दह २ महा हे जवी यहूँ रुद्र ॥ प ॥
 ओं पव २ वायू वरगहूँ रुद्र ॥ द ॥ ओं रुद्र २ वसुध्वि जां न माला वलं वि न स जा रुद्रि
 यहूँ रुद्र ॥ ज ॥ ओं गृध्र २ सप्त पाताल रुद्र गसर्प वा नर्ज प २ धामा देवी रुद्र
 रुद्र ॥ ने ॥ ओं आकश २ सूर्य हूँ रुद्र ॥ वा ॥ ओं श्री २ हय कर्ण हूँ रुद्र ॥ ॐ ॥
 ओं ॐ २ स्व गमन हूँ रुद्र ॥ ॐ नि वा क चक्र ॥ पू ॥ ओं ॐ २ चक्र वे ग हूँ रुद्र

२

रुद्र ॥ उ ॥ ओं हौं हौं स्व सुभा हूँ रुद्र ॥ प ॥ ओं श्री श्री शोभु मि यहूँ रुद्र ॥ द ॥ ओं
 हूँ हूँ चक्र वर्मनी यहूँ रुद्र ॥ ज ॥ ओं किमि २ सुवी यहूँ रुद्र ॥ ने ॥ ओं सिजि २ स
 हो वल हूँ रुद्र ॥ वा ॥ ओं हे ति २ चक्र वर्दिनि यहूँ रुद्र ॥ ॐ ॥ ओं धि वि २ महा
 विर्य हूँ रुद्र ॥ ॐ नि वा य चक्र ॥ पू ॥ ओं का का २ हूँ रुद्र ॥ उ ॥ ओं उ
 लू का २ हूँ रुद्र ॥ प ॥ ओं स्वा ना २ हूँ रुद्र ॥ द ॥ ओं धू क ना २ हूँ रुद्र ॥ ज ॥

ॐ यजति यहुं रुट् ॥ ने ॥ ॐ यमदूनी यहुं रुट् ॥ वा ॥ ॐ यमदुष्टी यहुं रुट् ॥ ॐ ॥ ॐ
 यममन्त्री यहुं रुट् ॥ ॐ यमकाश्यागिनीमं ॥ ॐ यमयहायस्वाहा ॥ पू ॥ ॐ ग
 कलायस्वाहा ॥ ॐ ॥ ॐ कालांकलायस्वाहा ॥ य ॥ ॐ कलंकहेयवायस्वाहा ॥ द
 ॐ नृदृहासायस्वाहा ॥ भू ॥ ॐ वनहूनासनायस्वाहा ॥ ने ॥ ॐ धीर्माध
 कायायस्वाहा ॥ वा ॥ ॐ किलिशलात्रवायस्वाहा ॥ ॐ ॥ ॐ वीपवाजदूता ॥

१०

धात्रलाठध ॥ ॐ वज्रविनहं ॥ ॐ वज्रवैष्णवा ॥ ॐ वज्रमृदलकी ॥ ॐ वज्रमूर्ज ॥ ॐ वज्र
 लालहं ॥ ॐ वज्रमालेवा ॥ ॐ वज्रगीर्णकी ॥ ॐ वज्रनृगज ॥ ॐ वज्रपूथहं ॥ ॐ वज्र
 धूपवा ॥ ॐ वजावलीकिर्णकी ॥ ॐ वज्रगंधधज ॥ ॐ वजादर्शनहं ॥ ॐ वज्रसुवर्ज
 ॥ ॐ स्वर्णवर्जकी ॥ ॐ धर्मधनुर्वर्ज ॥ ॐ वज्रवाद नमस्तु ॥ ॐ वज्रसुत्वसंश्रुहा
 न्वज्रनत्नमनूजं वज्रधर्मगायिने वज्रकर्मकूलोहव ॥ ॐ टकिं जहूं ॥ ॐ टः

किं जात हो ॥ सर्वज्ञ हान संसाहं जगदर्थ प्रणम दमं ॥ चिंता महिनि विवर्तु न श्रीसम्भ
 नमोस्तुते ॥ व्यापविष्ट महान्न नं सर्वभिनि सुदास्त्रि न ॥ कृपा कोठ महान्न
 श्रीसम्भ नमोस्तुते ॥ ॥ मन्त्र नयं ॥ ॐ नमो हगवर्ग वीरवी प्रणव जाय हूं
 हूं रुट् ॥ ॐ नमो महा कल्याणि संनिताय हूं हूं रुट् ॥ ॐ नमो जगन्मकुटोत्कट
 हं नवाय हूं हूं रुट् ॥ ॐ नमो उद्युक्त जालाग्रे हि वश सुखाय हूं हूं रुट् ॥ ॐ सुह

११

अहं जगत्सु जाय हूं हूं रुट् ॥ ॐ माहाधूमो धका जवपूत्राय हूं हूं रुट् ॥ ॐ व्या
 घृचर्मावे जध जाय हूं हूं रुट् ॥ हंसपूजा ॥ वा मकजमल्ल जलपंच दल कमलं च
 त्वा ॥ पूष्यं न्या ॥ ॐ वं वज्रवा जही य हूं हूं रुट् ॥ ॐ हों यों यामिनी य हूं हूं रुट्
 ॐ कूं भों माहिनी य हूं हूं रुट् ॥ ॐ कूं कों सें वा जिनी य हूं हूं रुट् ॥ ॐ हूं हूं सुग्रा
 णी य हूं हूं रुट् ॥ ॐ रुट् १ चक्षुकाय हूं हूं रुट् ॥ ॐ हवजुस्त्वाय स्वाहा ॥ ॐ

नमहि वैजायनाय स्वाहा ॥ ओं स्वाहो हूं यमनृत्यं वजाय स्वाहा ॥ ओं वायं हं ज
 त्रसंलवाय स्वाहा ॥ ओं हूं हूं हो वज्रसूर्याय स्वाहा ॥ ओं रुद्रं यमं वज्राय स्वाहा
 कजमूदिमं स्थापयित्वा ॥ येनोपवाजपूजा ॥ कल्याणप्रणवामलाधिकक
 जालावली छागृहा स्वदीगिप्रमुखी महासुखजनावाजा कविंवा नृक्ष ॥ या
 मि सर्वजगद्गुणोदयपजा श्री वज्रवाजाहिका ला वनप्रनमामि सुकु नृजपीथी

१२

वज्रनृत्यमिने ॥ यामि न्याखलू माहिनी हगवती सं चित्रिनी सर्वदा सैना सिन्यन
 थापना सुविमला योगध्वनी चक्षुका ॥ चत्वा ग्राहकानुक्खान नवजास्यामा
 सिना गमेजिनीः स्यामाधुमुत्ताथ सुगमं वेदनांदवं ॥ देव्या नर्यक्ष ॥ ओं नमो ह
 गवर्गवं वज्रवाजाही यहूं हूं रुद्र ॥ ओं नमो हगवर्गं हो यां यामिनी भुक्तिनृजय
 मिना लोका मा न न हूं हूं रुद्र ॥ ओं नमो सर्वतुल्य हयावहं महावज्र हूं हूं रुद्र

८ ॥ ओं नमो वज्रासनजि नमो जगति नवर्णकनी नमो जगती नमो हूं हूं हूं ॥ ओं नमो
 रणवनि नावनि को धनी कालिनी हूं हूं हूं ॥ ओं नमो सज्जो सुनी मात्रनी सु
 परुदनी पनाजय हूं हूं हूं ॥ ओं नमो ऊँ यविजय ऊँ ह्रीं सुह्रीं नो मा ह्रीं य
 हूं हूं हूं ॥ ओं नमो वैजिनी वज्रपा नाही महा या ॥ ७७ त्रिखरग हूं हूं हूं ॥ ह
 गैर्वशा चैनमंजु ॥ सुनाऊ प्रहधी कृपाम् ॥ ७७ निहसु पूजा ॥ न गोपापदं ग

१३

नाकृत्तकात्रिभमनूमादिकमयमखिलनिहितदायानां प्रणिदं गयामि ॥ पूज
 न ४ पूनत्रय नै संव नै वित्रध आ वकस्व ७ कि नाकृ मजिनसू नमै हू नानि कूसल
 नीजूनू मादिता नि वारधो सम्यकूप त्रिधमया श्ययजिन नलादिप्रिनयन
 हं यावज्जु नास्मि सर्वला वदा ण प्रहं यादिहि ४ सर्वला वन वाधि विदरध ॥ जूनू
 नमार्गन वास्य वेणि ॥ ७७ नि आदि याग पुथमसुमाधि ४ ॥ ॥ गदनू मेगी कनू

गममृदिगापडाः ॥ निचतुवमविहा नं विहावा ॥ ॐ स्वरावगुचा सर्वधर्माहं
 लावगुचाहं ॥ ॐ न्यतां रूप नवदुस्वरावा नमकोहं ॥ विप्रमातुं कुवेति सुतवा
 धिसंलाजयूजधम ॥ न नापुहिवा नवधन ॥ ॐ न्यता नीपतिवृद्धा ॥ येको न
 लवापू मंजुलं नीलधन्वाहं ॥ नदयत्रि नंका नहा भुजिमंजुलं गिकोर्क्षी ॥ नदप
 जिलीका नहा पृथ्वी मंजुलं चतुर्ध्रं पीनवर्ध कोर्क्षी वृष्टि शूकवजां किरी ॥

१४

नदयत्रि सुंका नहा सुभजुं चतुर्ध्रं जलमयं चतुर्ध्रं मंजुलं रंगपरधं हिनी ॥ न
 दयत्रि सुंका नहा कुटीगा नं चतुर्ध्रं चतुर्ध्रं नहा रंगहिनी महाभा
 जयू नं नोवन स्वरावहा जाड्हा नवकुलिकर्मणी र्वयमं ॥ नदयत्रि यं
 का नहा विषय नं नमः ॥ ॐ का नहा विस्ववर्ध नमः ॥ यं जा न विषय जा सुद
 लं ॥ नदयत्रि आलिकालिदिगुरा नचतुमंजुलं सूर्यमंजुलं च नयामं ॥

95

धत्रीर्षा दण्डुर्जालिङ्ग ननु ऊच यत्र वदु वदु घं भधर्षं दि नित्य हज
द यत्र न गऊ चर्मा वत्र धर्षं कृ नित्य ऊऊ दय ऊम नूख द्वांग धर्षं च नु य ऊऊ द
यत्र कर्त्ति जत्तं पूरु किया ले धर्षं पंचम ऊऊ दय न पत्र गुया धर्षं व नू म
ऊऊ दय न त्रि गूल वुक्त नित्र धर्षं ॥ सृष्ट पंचाश न जसि ना धा जर्षा व्याघ्र च
मर्ति वासने गृं गभ न वी ज वी लत्सु राश नो दु लयी न क क नू हत्सु न गभेति

नवनाथ जसोचिंतं कष्टिचूचक केयूजणिजामशियहोपवीनरुसाशनी॥षड्
 मूडामूडिनजविमधुलवामदक्षिणात्तरगयनिगहेजवकालजाग्रीवामकरधु
 नननयूगलया॥आलीछासुनसंस्थिनीलगवीनलवयन॥लगवतिवडुवाग
 हिजक्तवधूमूक्तकेणप्रिनेप्राचकवकुादिगवना॥एवंधुमंतिनकट्टिमरव
 लादिजुजावामरुजननक्तपूर्वकपालधनदक्षिणाकुजनहृष्टनर्जमीक

१७

दिफाश्ववधुधिजाननाजंघादयनरुगवंगंस्मागुञ्जनुजागयंतिरुगव
 गिलावयन॥गग४समयचक्रैयकुजीकांनविष्णुदलकमलीस्वनूय
 माहंरुमधुलापूठंविष्णवधुप्रिचकैकनूर्यशीकात्राधिष्ठितंजलावलिय
 प्रिवृनंमहासूरवकायात्मकैचिह्वाक्कायस्त्रावयन॥गगुपूर्वदलजकि
 नीनीलाउरुजयप्रलामाहत्रिगापश्चिमयप्रखधुगहाजक्तादक्षिनप

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 स्वर्गांगदङ्गि ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 मूलाविहृषिणा ॥ विदिग्दलैषूचत्वाविर्वाधिविरुक्कपालिनी ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 लियजिबुनैधर्मकायात्मकं स्वर्गपूयेधचजिस्वलावैचिनयत् ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

११

ॐ पूर्वा नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 धर्ममहाकैकालचक्रकीदया ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दिनाहमिदानीनमिना ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 विनीतमयी नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वायुव्यानदवीकाटवउपल्लंकेष्वनी॥सांऊंळीकृत्राप्रमात्रववशुद्ध
डूमाद्याय॥ॐमिठपपी०विमलाहमिणीलपानमिनासमृदयज्ञानी॥ॐ
गिचिद्रवऊं॥गगलुकाहवाकृकंआकात्रनिर्जागंमसूत्रैर्गंआमद्युलानु
ठेनूकाधिष्ठिनीनक्तयमावलिपत्रिवृगंसीगकायात्मकंमनस्वलावी
हचानिस्वलावयन्॥गडुकांऊंपूर्वात्रकामत्रयजुकुलीकमंभावगी॥ॐ

[illegible]

निव्या न पात्र मिता कु य रूपे ॥ फोंर वायू व्यात्र काचि म हा ए ज व ह य क धर्म ॥ ३॥
 के चे म ना त्र हि मा ल य वि नू या कु ख ग न ना ॥ ॐ नू प रं द म दूर्ज या रु मि
 प्र रूप पात्र मिता ज नू त्या द रूप ॥ ॐ नि वा कु क ॥ ग ग ४ वा हू का य च क ॥
 ओं का न र्ज जू द्या त वा यू नं उ ला नू र्दं शु क क का ना धि वि रु रं च का व लि स
 म लै कू र्ग नि र्मा ध का या त्म के पा ना ल स्य हा वं पा ना ल वा णि नी स्व स्व र प

१८

हा व य न् ॥ न उ म स्य प्रं क पूर्वा न पु न पू र्यं मि हा व लं च क वे ग म ॥ ॐ उ र्ज
 न गृ ह दे व ना या ज त्र व कू र स तु ग्रा हा ॥ ॐ नि धे ला य क दू री ग मा रु मि उ पा य
 या ज मि ता ध र्म रूप ॥ ॐ क य धि मा र्जो ज मृ ह य गृ वे शे णी नी ॥ ॐ उ र्द
 जि हा न र्ज व दू वि गं भ्रा का ग ग रं च क व र्मि नी ॥ ॐ नू प म ला य क जू च लो रु
 मि प्र धि धि या त्र मि ता न्व य रूप ॥ नै र्ज भ्रा र्ज ना य ज र्जो ह नू क र्ज वा न ॥ मि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥
 लपा नमिता संवृद्धिस्तन ॥ मंड वायुवा नमो वै गोच नचक्रवीरुनि ॥ कुंज
 भ नाई कलना या वज्रसत्त्वमहाविद्याला वयम् ॥ ॐ नमो भगवते धर्ममया
 निरूपनपो नमिताप नचक्रस्तन ॥ ॐ नमो भगवते धर्ममया
 चक्रवक्रा चक्रुस्तन नमो भगवते धर्ममया ॥ ॐ नमो भगवते धर्ममया

२०

वासुदेवाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥
 प्रचक्षुदिदया चक्रवक्रा चक्रुस्तन नमो भगवते धर्ममया ॥
 निनगा मोदुपिस्थ मूक्तकं भ नमो भगवते धर्ममया ॥
 जीवनायै चक्रवक्रा चक्रुस्तन नमो भगवते धर्ममया ॥
 वयम् ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥

गा. यथि मदा नमः नाथ्य जक्ता. दक्षिण द्वा र शक ला ध्या यि ना ॥ आरु नय नी
 अग्नी वायु र्ध्व जेष्ठा न का र हा व ॥ यम दानि ला र्ध्व पि काः यम दू कि पि क जक्ता य
 म उरु जक्ता ह रि ना यम मथे नी ह रि न नी ला त्ता व ध न ॥ पु का या गि न्या उ
 क व कुा व रु र्जु प्र ग्या ली ता स मा स ना नि व स ना पंच मू डा वि रु धि ना. क
 पा ल र्ध्व डां ग वा मं च. द क्षि ण उ म नू र्ध्व डां उ रु क ला त व द ना वि ल य

२१

ॐ आ ४ हूं ॥ गि ज कं ० ह द यं क मे हा वि ला व. स्व र्ग म न्य पा ना लं च क म्ति ह वं क
 मा न् ॥ म न ४ पु र्व व द ग न्या ण ४ ॥ ॐ आ ४ हूं स र्व वी ज या गि नी का य वा क चि क
 व र्ध स्व रा वा त्म को हं ॥ ॐ व र्ज सृ ज्ञा स र्व ध मा ना व रु णु डा हं ॥ स मा वि ग र्ज न
 च क मा का ष द र्ण इ ष्ट ॥ ॐ हूं वं ही ४ ॥ आ त्म नि मं ज लं वृ वां क य ४ या ग णु
 द्रा स र्व ध मा नी या ग णु डा हं ॥ ग द नू ज्ज हि र्ध च नु मां स र्व वी ज या गि नी छी

हं नमः वरुण स्वरावात्म को हं ॥ यथा हि जाम माश्रितः शस्त्रा पिता सर्वतथा गता ॥ सु
 धर्मा हं त्वाप यिष्यामि शुद्धिं दिव्यं नवा विदमः ॥ ॐ शुभं सर्वतथा गता जूहिषि
 कस्तुमाश्रितः यद्दुः ॥ गताम कृता ॥ जूहिषि कर्म महावर्तुं धेनुं कर्म नमः ॥ द
 दा ॥ सर्वपूजा नं गिगुह्यालय सं हवं ॥ ॐ दंत सर्वपूजा नीयूषा की पूजना
 यवः ॥ मकृ दपंच कुली हवं ॥ ॐ सर्वपूजा चूगम शिमहा मकृ ती प्रगि हस्व

२२

हा ॥ पू ॥ ॐ वरुणः श्वेति जूहिषि च हं ॥ द ॥ ॐ वरुण वधू नीय जूहिषि
 च हं ॥ य ॥ ॐ नल वरुण जूहिषि च वरां ॥ उ ॥ ॐ धमे वरुण जूहिषि च वरां
 ॥ जेध ॥ ॐ कर्म वरुण जूहिषि च वरां ॥ ॐ गि मकृ टा हिषे क ॥ जूशा हिषे
 कत्वमसि वरुण ॥ वरुण हिषे क न ॥ ॐ दंत सर्वपूजा त्वं कृ वरुण सुसिद्ध व ॥
 वरुण ॥ ॐ वरुण धिपती त्वाम हिषे चाभिनि वरुण सम यस्त्वं हो ॥ वरुण वरु

ज३ ज३ ज३ ॥ य३ ॥ व३ स३ त३ त्वा३ म३ रि३ वि३ चा३ वि३ व३ शु३ ना३ मा३ हि३ र्दे३ क३ न३ ॥ ह३ श्री३ ह३ नू३
 क३ ना३ म३ न३ चा३ ग३ न३ त्वं३ जु३ र्ज३ व३ स्व३ ॥ ना३ म३ ॥ व३ शु३ स३ त्वा३ सं३ ग३ रा३ द्वा३ ज३ त्वा३ म३ नू३ न३ व३ शु३ ध३
 म३ ग३ हा३ मि३ ने३ व३ शु३ क३ र्म३ क३ ला३ ॥ वं३ ॥ ज३ ला३ लि३ ग३ न३ मू३ डा३ ॥ ओ३ श्री३ ह३ ह३ नू३ क३ व३ शु३ स्व३ त्वा३
 वा३ म३ की३ ह३ ॥ पु३ न३ ३३ ज३ क३ र्म३ धा३ पू३ र्वा३ न्या३ ग३ ॥ यं३ च३ प३ चा३ ज३ पू३ ज्ञा३ ॥ घ३ शु३ वा३ द३ न३
 म३ गु३ मि३ ॥ श्री३ च३ क३ र्म३ न३ म३ न३ स३ म३ न३ व३ शु३ दा३ क३ वी३ न३ वी३ न३ ध३ वी३ पु३ व३ न३ वी३ ज३ ग३ ह३ म३ धि३ न३

२३

ॐ ॥ कालाननाललितावाहूयूरामपशूकानूधनिर्जनमामिपजांघ्रिपश्री
 ॥ १ ॥ शार्ङ्गकलस्यरुववंधनहृदकानिविस्तरात्रिभूद्रपत्रिगुद्रशविजगत्त
 प्रवृष्टशेषद्रुजिगामलवाधनूयंसंपूजनीमिगवपादसजाजनेहू ॥ १ ॥ ॐ मिमं
 दुलनाकुशीनामदिगीयसमाधि ॥ ॥ न३ न३ ३३ ज३ ला३ लि३ कालि३ य३ त्ति३ यं३ च३ म३ मि३
 का३ ल्क३ न३ द३ व३ गा३ वृं३ दा३ नू३ द्वा३ न३ यं३ न३ द३ कि३ मा३ वा३ यू३ ना३ नि३ स३ म्य३ ऊं३ ग३ वि३ च३ की३ क३ न्य३

नादि संसिद्धि वी नवी जनी सम जणी र नां वा म ना सा पूट न प्र वं स ना लो प्रति विं व
 ग स्वा हा का ने चं ड मी जली र नां वि विं ग्य न गु अ ठि मी गुं कू रूं का र्ज न स गु वी ज प
 नि ठा ग ह ग वी न स ह म स व र्ज गु क व र्धु माली ठा स न स्थ ना का ण लि रि न चि
 कू स ह र्णं दि हू र्ज क व र्क व र्ज व र्ज य धू म ध र्ज ॥ मू ह या ल्यां व र्ज क पाल धा जि
 धी दि हू र्ज क मू र्ज न ह व र्धु व र्ज वा ज ही मा लो न वि र ल व्य ॥ न यो मा या

२४

सून न धनि मा कू कू धा गु का ल म क व कू क म द ल व ये न् ॥ रू ग कि ष्म ण
 ना नि स म य व र्ज स म य व र्ज का य व र्ज वा क व र्ज वा क व र्ज वि
 कू व र्क वि कू व र्क वा कि नी षू वा कि न्वा द था य थ य थ म षू वी रू मू ह ग व
 न् मू र्ज व ह ग व थो दि हू रू ग ल पु रू म्पा ४ पु नि हू रा रा व नी या गे च स म य सून न
 मा हा ना ग ड वा य न् न द व प नि न र्म सिं ह ना न क्ता हा ल र्णं हू र्णं हू का र्ज म हा

सूत्रं प्रयत्नं वाच्यम् ॥ ननु उकार उकारं हंकारं हंकारं हंकारं हंकारं हंकारं हंकारं
 निवृत्तिं निवृत्तिं चैवं चैवं चैवं चैवं चैवं चैवं चैवं चैवं चैवं चैवं चैवं चैवं चैवं चैवं चैवं चैवं चैवं चैवं
 गजपतिं विदुः यत् ॥ निमित्तकल्पं यत् सूत्रं यत् विदुः निवृत्तिं यत् ॥ स्वदेवता
 टिनिमग्नलवक्रमधिमूर्धन् ॥ पूर्वन् ॥ आकर्मपाशादिपूष्यन्यानां ॥
 लांघीसुगोष्णिमाहायोगे ॥ योगमाधिकश्चित्सुगोष्णिमाहायोगे नाम ॥ ननु

जाय जाय ॥ तारिच नै रथ न ज क हूँ कानं नादा मी माला इत्या यस्त्वा निग
 न्य स्वनाह प्रविष्ट वज्र मा गप मी ग हित्या भव धु मि मा रार धम त्या यर गय
 नि मूर्खा नृ मृ न्य स्व मख द्वा जेश प्रविष्ट ना देव जि री पू न ॥ न स्मा दू न थ
 य सवर्ग शुभ विहा व येन ॥ न गय ना र ग व या मूल म ॥ ह्यां जाय या दे नि
 जाय विधि ॥ पूर्व व ॥ जाया पू म लं घं म मि न नी वाल माल ह न्ना वू

जगो पैका नक्ष वायु मधुर्ल गदुपत्रि नैका नक्ष जिन मधुर्ल नगुगुत्त ४ का न पत्रि
 दानगुत्त पत्रि लान नमूगुत्त नय वृत्ति काय वैस्थि नय अलान नगुत्त का पिकै
 अंगुत्त अंगुत्त लौ न पौ नौ वै का नजाधिष्ठि नै पं चामृत्त पंच प्रदिप नू पक्ष नि
 व्याय वायु पत्रि न छति नाग्नि ना पविलि दं विजाऊ नादि कै महि नव लान
 वधु देव नू पैं दृष्टा नदुपत्रि पा नद वधु विन सि मागुत्त गत्रि नाहं ए वा धमूत्त

२७

मृत्त मय गुत्त खदी गंविलि नगति नद वपा नद वधु गी गिर नै च दृष्टा नदुपत्रि
 जालि कालि पत्रि हा नै ॥ अंगुत्त ४ का नै था दू नू कम ना पत्रि नू नू द व नास
 विनाऊ गद पं कृत्वा सकला मृत्त न समानी य समा पत्रि पू र्वे ऊ वी हय ॥
 यथा यथा नै वृत्ति नू पत्रि छा ल वनी या ॥ नग ४ अं का नादि क मं म विनि
 नी म वली क नय ऊ नै धाधि हय ॥ नगो जाल मूत्ताः व धा ॥ ए का न पूर्व

कैलगवर्गसपविवात्रमाकषयं॥आकषधमूत्रागारकृत्वांगुश्वीश्वराम
 रधभूविमंगुश्ववजोदृष्टसंस्थायललनदंभजवर्गवर्गनहत्वामयन॥आ
 कांतपाशोदृष्टिमुद्रितकात्रनादनदंभदिग्गताकधगुस्थकषयं
 विजयागीनीति॥पाशादिष्वन्याषु॥पंलांयंमु॥गगोआदिकालिय
 निधनचंद्रस्यखलावदनदयागहंकारैदृष्ट॥अन्यन्यानुगनासर्वव

२१

मा॥ओंयत्रस्रजानुगनासर्वधर्मा॥ओंअर्घीनानुगनाप्रविष्टासर्वधर्मा॥चंद्रस्र
 य्या॥रूढहंकारपनिधमभेन॥वज्रांगतिउचविकचकृत्कनदयनदमृत्त
 ७ नवस्थायअत्ताम्यावलिधिकाअभिदय॥१०॥द्वयप्रमानसमपु
 माशंनदृक्त्वावर्षेपत्रपुमाशं॥११॥नमस्यनरुवेयुनेगादय॥ममानुय
 हहंउहता॥हगवतहंएवशुक्रजिह्वाविलय॥ओंवेगाललिहोज॥हंवे

हो॥ वज्रजकिचसुमयस्त्वं ह॥ हो॥ हगवस्तुह्य या जकिचादिनी का
कासादिनी वज्रकयत्॥ ओं क न र कु नू र वध्य र वाण य र ऊँ र ऊँ र रु दू र द ह
र य च र रु रु र स व नू धि नो न मा ला व ले वि नै गृ क र स प्र पा ना ल ग न हू र्ज
ग स यै वा न र्ज य र आ क सु र ऊँ र रु र्ज र ऊँ र हौ र ऊँ र हूँ र हिलि र सिलि
र सिलि र हिलि र धि वि र हूँ र रु दू र स्वाहा॥ हूँ मि मं यै य वि च क दे व ना

[illegible]

॥ ॐ निधीहेतुकसं पृथ्विक मूर्त्तारण्य नपूजाविधिसमाप्तं ॥
सिलह २४८ ॥ इति ॥



